Karpatri Maharaj

Swami Karpatri Ji Maharaj was born on 1907 AD (Samvat 1964 Vikrami) on the second day of Shukla Paksha, in the month of Shravan in Bhatni village of Pratapgarh district of Uttar Pradesh as the son of Smt. Shivrani Devi and Shri Ramnidhi Ojha. His surname was Harinarayan Ojha. Swami Karpatri Ji Maharaj received education in the various disciplines of Sanskrit, Grammar, Philosophy, Bhagwat, Nyayashastra and Vedanta. Swami Ji was married to Mahadevi at the age of 16, but after a few years, after getting detached from worldly illusion, he started on the path of public welfare and spirituality in search of knowledge. In 1926 AD, after leaving home and wandering on the banks of the Ganges, he prayed at the feet of Swami Shri Brahmananda Saraswati for initiation of Sanyasa Deeksha. He was instructed to study in Narwar, Madhya Pradesh and thereafter taking Naishthik Brahmacharyavrata, he became Harihara Chaitanya from Padati Harinarayan and after reaching Narwar, he received all the teachings from Shaddarshanacharya Swami Shri Vishweshwarashram Ji within thirteen months. After attaining knowledge, while living in solitude on the banks of the Ganges he did severe penance and also meditated in the cave of Rishikesh Himalayas.

After coming out of deep self-realizing meditative contemplation (Samadhi), he continued to travel and disseminate knowledge. May truth prevail, may unrighteousness be destroyed, may there be goodwill among the living beings, may there be welfare of the world – he spread such knowledge to the people. Paramhansa Harihara Chaitanya got the name of Karpatri as he ate food without using a dish on his hand and he became popular as Swami Karpatri Ji Maharaj.

In the year 1931-32, at the age of 24, after receiving due knowledge from Swami Shri Brahmanand Saraswati Ji Maharaj in Kashi, he came to be known as Hariharanand Saraswati and became a complete saint who became famous as "Paramhans Paribrajakacharya 1008 Baba Hariharanand Saraswati Shri Karpatri Ji Maharaj". In the year 1932, by traveling all over India for the purpose of promoting religion, he awakened spiritual consciousness by interacting extensively with the teachers, scholars and religious lovers and in the year 1932 itself, on the occasion of Haridwar Kumbh, in Haridwar-Rishikesh, he exchanged scholarly thoughts with Pt. Madan Mohan Malviya.

Swami Karpatri Ji Maharaj not only gave knowledge to the people in the society through his religious journeys but also wrote books along with the publication of various magazines. His main texts include Sankirtan Mimamsa and Varnashrama Maryada, Samanvaya Samrajya Sanrakshan, Sri Bhagvatatva, Marxism and Ramarajya, Ved ka Swaroop and Pramanya (Form of Vedas and their evidences), Veda Pramanya Mimamsa, Ahmartha and Paramartha Saar, Bhakti Rasarnava, Veda Swaroop Vimarsh, Chaturvarnya Sanskriti Vimarsh, Vichara Piyush, Vedarthparijat, Ramayan Mimamsa etc. He was bestowed honour for many of these books. He was honoured with five thousand rupees by the Government of Uttar Pradesh for his work on Bhakti Rasarnava Granth and five thousand rupees by Hanuman Trust, Calcutta for his work in Ramayana Mimamsa Granth. Considering his erudition, he was honoured with the degree of D.Litt in 1978 by Shri Sampurnanand Vishwavidyalaya, Varanasi.

In the year 1940, he founded 'Dharma Sangh' and created awareness among the followers of Vedic Sanatan everywhere by undertaking extensive pilgrimages on foot. After establishing Shri Dharmasangh Shiksha Mandal, Kashi, he also established Sanskrit schools at various places under it. He also constituted the 'Ramrajya Parishad' and nominated several candidates on its ticket for the elections of 1951 and 1957. Till the end of life, remaining devoid of attachment, egoism and karma-attachment, he continued enthusiastically towards the promotion of Vedic religion culture. He passed away on February 7, 1982 and merged with the great universe.

Department of Posts is pleased to issue a Commemorative Postage Stamp on Karpatri Maharaj.

Credits:

Stamp/FDC/Brochure : Shri Anuj

Cancellation cachet : Smt. Nenu Gupta

Text : Referenced from the contents provided by UP Postal Circle
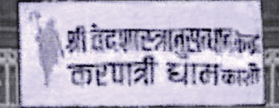
करपात्री महाराज

स्वामी करपात्री जी महाराज का जन्म 1907 ईसवी (1964 विक्रमी संवत) में श्रावण मास के शुक्ल पक्ष की द्वितीया को उत्तर प्रदेश के प्रतापगढ़ जिले के भटनी गांव में हुआ। उनकी माता का नाम श्रीमती शिवरानी देवी और पिता का नाम श्री रामनिधि ओझा था। उनका उपनाम हरिनारायण ओझा था। स्वामी करपात्री जी महाराज ने संस्कृत, व्याकरण, दर्शन शास्त्र, भागवत, न्यायशास्त्र एवं वेदांत की विभिन्न विधाओं में शिक्षा प्राप्त की। 16 वर्ष की आयु में स्वामी जी का विवाह महादेवी के साथ हुआ, परन्तु कुछ ही वर्षों के पश्चात सांसारिक मोह–माया से अनासक्त होकर वे ज्ञान की खोज में लोक कल्याण और आध्यात्म के मार्ग पर चल पड़े। वर्ष 1926 में उन्होंने घर त्याग दिया। गंगा तट पर विचरण करते हुए उन्होंने स्वामी श्री ब्रह्मानंद सरस्वती के चरणों में संन्यास दीक्षा के लिए प्रार्थना की। उन्हें मध्य प्रदेश के नरवर में अध्ययन करने का निर्देश दिया गया और उसके पश्चात नैष्ठिक ब्रह्मचर्य व्रत को धारण कर वे पदाति हरिनारायण से हरिहर चौतन्य बन गए। नरवर पहुंचने के पश्चात उन्होंने तेरह महीने के भीतर षड्दर्शनाचार्य स्वामी श्री विश्वेश्वराश्रम जी से संपूर्ण शिक्षा प्राप्त की। ज्ञान प्राप्ति के पश्चात गंगा तट पर एकांतवास में उन्होंने कठोर तपस्या की और ऋषिकेश हिमालय की गुफा में भी ध्यान किया।

गहन आत्मसाक्षात्कार समाधि से निकलने के पश्चात स्वामी जी ने अनेक यात्राएं कर ज्ञान का प्रचार–प्रसार किया। उन्होंने सत्य की जय हो, अधर्म का नाश हो, प्राणियों में सद्भावना हो, विश्व का कल्याण हो, जैसा ज्ञान लोगों तक पहुंचाया। परमहंस हरिहर चैतन्य भोजन हेतु पात्र के स्थान पर अपने हाथों का ही प्रयोग करते थे अतः वे स्वामी करपात्री जी महाराज के नाम से सुप्रसिद्ध हुए।

वर्ष 1931–32 में, मात्र 24 वर्ष की आयु में स्वामी श्री ब्रह्मानंद सरस्वती जी महाराज से काशी में यथोचित ज्ञान प्राप्त करने के पश्चात वे, हरिहरानंद सरस्वती कहलाए जाने लगे और पूर्णरूप से संन्यासी बन गए तथा ''परमहंस परिव्राजकाचार्य 1008 बाबा हरिहरानंद सरस्वती श्री करपात्री जी महाराज'' के नाम से सुप्रसिद्ध हुए। वर्ष 1932 में धर्म संवर्धन के प्रयोजन से पूरे भारत में भ्रमण करते हुए आचार्यों, विद्वानों एवं धर्म प्रेमियों से व्यापक संवाद कर स्वामी करपात्री जी महाराज ने आध्यात्मिक चेतना जागृत की एवं 1932 में ही हरिद्वार कुम्भ के अवसर पर, हरिद्वार–ऋषिकेश में पंडित मदन मोहन मालवीय से शास्त्रार्थ किया।

स्वामी करपात्री जी महाराज ने अपनी धार्मिक यात्राओं के माध्यम से समाज में ज्ञान का प्रचार–प्रसार किया। उन्हें अनेक पुस्तकों के लेखन के साथ–साथ अनेक पत्रिकाओं के प्रकाशन का भी श्रेय प्राप्त है। उनके द्वारा लिखे गए प्रमुख ग्रंथों में संकीर्तन मीमांसा एवं वर्णाश्रम मर्यादा, समन्वय साम्राज्य संरक्षण, श्रीभगवतत्व, मार्क्सवाद और रामराज्य, वेद का स्वरूप और प्रामाण्य, वेद प्रामाण्य मीमांसा, अहमार्थ और परमार्थ सार, भक्ति रसार्णव, वेद स्वरूप विमर्श, चातुर्वर्ण्य संस्कृति विमर्श, विचार पीयूष, वेदार्थपारिजात, रामायण मीमांसा आदि शामिल हैं। इनमें से कई ग्रंथों की रचना के लिए उन्हें सम्मानित भी किया गया। उनकी रचना, भक्ति रसार्णव ग्रन्थ के लिए उन्हें उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा पांच हजार रूपये एवं रामायण मीमांसा ग्रंथ के लिए हनुमान ट्रस्ट, कलकत्ता द्वारा पांच हजार रुपये के पुरस्कार से सम्मानित किया गया। उनकी विद्वता को देखते हुए, 1978 में श्री सम्पूर्णानंद विश्वविद्यालय, वाराणसी द्वारा उन्हें डी.लिट् की उपाधि से भी सम्मानित किया गया।

वर्ष 1940 में उन्होंने 'धर्म संघ' की स्थापना की और अनेक पैदल धर्मयात्राएं कर सर्वत्र वैदिक सनातन धर्मानुयायियों में जागृति उत्पन्न की। करपात्री जी महाराज ने श्री धर्मसंघ शिक्षा मंडल, काशी की स्थापना कर इसके अंतर्गत विभिन्न स्थानों पर संस्कृत विद्यालयों की भी स्थापना की। उन्होंने 'रामराज्य परिषद' का भी गठन किया और वर्ष 1951 और 1957 के चुनावों में इसके टिकट पर कई प्रत्याशी खड़े किये। जीवन के अंतिम समय तक आसक्ति, अहंकार और कर्मासक्ति से स्वतंत्र रहते हुए वे उत्साहपूर्वक वैदिक धर्म संस्कृति के संवर्धन में लगे रहे। 7 फरवरी, 1982 को करपात्री जी महाराज का देहांत हो गया और वे महाप्राण में विलीन हो गए।

डाक विभाग, करपात्री जी महाराज पर स्मारक डाक–टिकट जारी करते हुए प्रसन्नता का अनुभव करता है।

आभार :

डाक–टिकट / प्रथम दिवस आवरण / सूचना विवरणिका	: श्री अनुज
विरूपण कैशे	: श्रीमती नीनू गुप्ता
पाठ	: उत्तर प्रदेश डाक परिमंडल द्वारा प्रदान की गई सामग्री से संदर्भित।

तकनीकी आंकड़े

TECHNICAL DATA

मूल्यवर्ग	: 500 पैसे
Denomination	: 500 p
मुद्रित डाक–टिकटें	: 201600
Stamps Printed	: 201600
मुद्रण प्रक्रिया	: वेट ऑफसेट
Printing Process	: Wet Offset
मुद्रक	: प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद
Printer	: Security Printing Press, Hyderabad

The philatelic items are available for sale at Philately Bureaus across India and online at http://www.epostoffice.gov.in/PHILATELY_3D.html

मूल्य ₹ 5.00